भारतेन्दु युग

NOTES NO - 15

15-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

भारतेन्दु युग आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य का पहला चरण है। अब इसका सर्व स्वीकृत नाम 'भारतेन्दु युग' है। और यह नामकरण भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाम पर किया गया है। भारतेन्दु का महत्व आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रायः सभी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में इस प्रसंग में लिखा है-

"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनो पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को नये मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया। उनके भाषा-संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया और वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गये। ... इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और उसे वे शिक्षित जनता के साहचर्य में लाए।"

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु युग का प्रारम्भ कब से माना जाये, इस पर हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में कुछ मतभेद हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसका प्रारम्भ 1843 ई० से माना है। इसमें 1843 ई० से सीधा रखने का कोई तुक नहीं है। इस युग को सर्वाधिक प्रभावित करने और हिन्दी साहित्य को आधुनिक बोध से जोड़ने वाले भारतेन्दु का जन्म 1850 ई० में हुआ था। इसलिए कुछ लोग इस पक्ष में है कि इसी वर्ष को भारतेन्दु युग का प्रारम्भ वर्ष माना जाये। लेकिन यह मानना बहुत तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि भारतेन्दु ने जन्म लेते ही तो हिन्दी साहित्य को प्रभावित नहीं कर दिया। यदि उनके जन्म वर्ष को इस साहित्यिक युग का प्रारम्भ वर्ष मानते हैं तो हमें उनके निधन-वर्ष 1885 ई० को इस युग का अन्त-वर्ष मानना चाहिए। ऐसा किसी ने नहीं माना। इसलिए डॉ० बच्चन सिंह की बात समझ में आती है कि सन् 1857 को आधुनिक काल का प्रारम्भिक बिन्दु मानना चाहिये, क्योंकि हिन्दी भाषी क्षेत्र में ही नहीं, पूरे भारतवर्ष के इतिहास में यह वर्ष एक निर्णायक मोड़ उपस्थित करता है। यह भारत के स्वाधीनता-संग्राम की शुरुआत का वर्ष

Scanned with CamScanner

है। भारतेन्दु युग की अन्तिम सीमा 1900 ई० स्वीकार करना उचित होगा, क्योंकि इस वर्ष नागरी प्रचारिणी सभा काशी के तत्त्वावधान में 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका में द्विवेदी युगीन हिन्दी के दिशानिर्देशन में उसके व्यक्तित्व-निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई।

- भारतेन्दु युगीन काव्य का स्वरूप -

भारतेन्दु युगीन काव्य-धारा अपनी पूर्ववर्ती का ही सहज विकास है। वह नितांत नयी नहीं है, किन्तु उस पर आधुनिक जीवन-परिस्थितियों का गहरा प्रभाव है। प्राचीन काव्यधारा अपनी प्रवणता के स्मरण आधुनिक धारा को अपने भीतर आत्मसात कर लेती है- भारतेन्दु युग में। क्या भारतेन्दु युग में पुरानी धाराओं ने नयी धाराओं को आत्मसात किया या नयी धाराओं ने पुरानी धारा को अपने भीतर विलगित कर लिया?

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु युग से पूर्व रीतिकाल था और उससे पूर्व भक्तिकाल था। भक्तिकाल की धारा रीतिकाल से होकर क्षीण रूप में भारतेन्दु युग तक पहुंचती है। भारतेन्दु युग में भक्ति के तीन स्वरूप मिलते हैं -

1- निर्गुण भक्ति धारा - (संत + सूफी)

सूफी काव्य भारतेन्दु युग में नहीं मिलते, किन्तु संतों की निर्गुण धारा का अस्तित्व इस युग में मिलता है।

2- वैष्णव-भक्ति की काव्य धारा - (रामकाव्य + कृष्णकाव्य)

भारतेन्दु युग में कृष्ण भक्ति-काव्य की प्रमुखता है। इस युग में अपवादों को छोड़कर रामकाव्य नहीं लिखा गया। विचारणीय प्रश्न है कि भारतेन्दु युग में केवल कृष्णकाव्य को ही प्रमुखता मिली, रामकाव्य को नहीं - क्यों? रीतिकाल तक आते-आते राम भक्ति काव्य लुप्त प्राय हो गया था। राम-भक्ति मर्यादा और शील पर आधारित थी। उसमें शृंगार भी मर्यादित है। राग-तत्व संयमित है। राम-भक्ति में स्वकीया प्रेम है। यानी राम काव्य मर्यादा और शील का काव्य है।

Scanned with CamScanner

रीतिकाल की परिस्थितियां सामंती और दरबारी थी। ऐसे वातावरण में मर्यादित राम भक्ति का कोई अवकाश नहीं था। रीतिकाल में यद्यपि राम-काव्य लिखा गया, लेकिन उसका स्वरूप बदला हुआ था। रीतिकाल में माधुर्य भक्ति को प्रधानता मिली।

कृष्ण-भक्ति काव्य प्रेम-काव्य है। उसमें सर्ग और आवेग की प्रधानता है। उसमें परकीया प्रेम की प्रधानता है। स्वकीया से परकीया प्रेम में अधिक आकर्षण है। माधुर्य, भक्ति का प्रभाव रीतिकाल में राम-काव्य पर भी पड़ा। राधा-कृष्ण के पीछे रीतिकाल के सामान्य नायक-नायिका है। राम-भक्ति काव्य प्रबंध काव्य है और रीतिकाव्य मुक्तक। अतः काव्य रूप की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से रीतिकाल में रामकाव्य का निर्वाह संभव नहीं था। भारतेन्दु युग ने विरासत में कृष्ण-काव्य को प्राप्त किया। उसकी काव्य संवेदना पर रीति-कालीन चेतना का गहरा प्रभाव लक्षित होता है और यह स्वाभाविक ही है।

Scanned with CamScanner

* ईश्वर और देश - प्रेम की समन्वित भक्ति -

इस धारा में भक्तिकालीन स्वर की प्रधानता नहीं थी। भारतेन्दु कालीन कवि ईश्वर का आह्वान अपने लिए नहीं, देश और समाज के लिए करता है। देश और समाज की चिंता पुनर्जागरण का प्रतिफलन है।

* राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति का विचित्र समन्वय -

एक ही कवि महारानी विक्टोरिया की वंदना भी करता है और कहीं - कहीं ब्रिटिश सत्ता की आलोचना भी करता है। क्योंकि तत्कालीन साहित्यकारों ने अंग्रेजी शासन से प्राप्त शांति और सुव्यवस्था की प्रशंसा की तो दूसरी तरफ उनके आर्थिक शोषण का विरोध भी किया। उस समय जो भीषण अकाल पड़े उन अकालों में ब्रिटिश की भूमिका को अमानवीय को देखकर साहित्यकारों ने उसकी भर्त्सना भी की। भारतेन्दु ने भारत - दुर्दशा नामक पुस्तक लिखी राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति का काव्य एक नवीन स्वर था।

Scanned with CamScanner